9

सदाचार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह कई तरह के काम करता है, परन्तु समाज के कुछ नियम हैं। नियमों के अनुकूल किया गया काम ही सदाचार कहलाता है, जैसे – गुरुजनों का आदर करना, सत्य बोलना, सेवा करना, किसी को कष्ट न पहुँचाना, मधुर वचन बोलना, विनम्र रहना, बड़ों का आदर करना आदि। ये उत्तम चरित्र के गुण हैं। जिस व्यक्ति के व्यवहार में ये गुण होते हैं, वह सदाचारी कहलाता है।

सदाचार शब्द दो शब्दों के मेल से बना है, सत्+आचार। 'सत्' का अर्थ है 'अच्छा' और 'आचार' का अर्थ है 'व्यवहार'। इस तरह सदाचार का अर्थ है 'अच्छा व्यवहार'। अच्छे व्यवहार से ही व्यक्ति के सदाचारी होने की पहचान होती है।

सदाचारी बनने के लिए ईमानदार होना आवश्यक है। जो व्यक्ति अपने प्रति ईमानदार होता है, वह सबके प्रति ईमानदारी बरतता है। चाहे सेवा की बात हो या कर्त्तव्य की, धन की बात हो या कमाई की, लेने की बात हो या देने की! सब में उसका व्यवहार ईमानदारीपूर्ण रहता है। ईमानदार व्यक्ति गरीब होते हुए भी धनी होता है, क्योंकि ईमानदारी के कार्यों से उसे सम्मान और आनंद मिलता है। बेईमान व्यक्ति धनी तो हो सकता है, परन्तु वह सम्मान और आनंद प्राप्त नहीं कर सकता। जो व्यक्ति सदाचारी होता है, वह अनुशासित एवं संयमी भी होता है। इन गुणों को उसके बोल–चाल, कार्य व्यवहार, खान–पान और रहन–सहन आदि में देखा जाता है। वह स्वयं अनुशासित रहकर अच्छे व्यवहार का परिचय देता है।

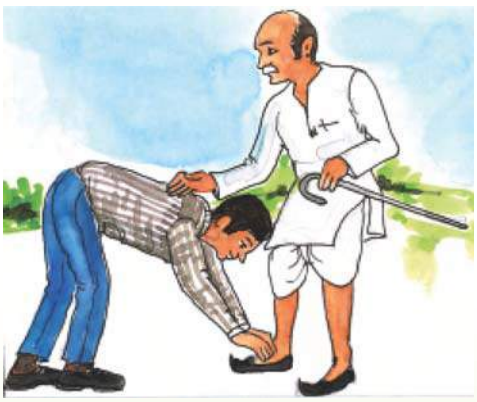

सत्य बोलना एक प्रकार की अखण्ड तपस्या है। झूठ बोलना अच्छा नहीं माना जाता। जो व्यक्ति हृदय से सत्य बोलने का व्रत लेता है, वह सदाचारी होता है। ऐसा व्यक्ति मरते दम तक सत्य बोलने का पालन करता है।

सदाचारी व्यक्ति जहाँ भी जाता है, प्रसन्न रहता है और अपने सम्पर्क में आने वालों को भी प्रसन्नता देता है। उसके पास सद्‌गुण तथा सद्‌व्यवहार का भण्डार होता है। वह झूठी प्रशंसा से प्रभावित नहीं होता। वह निर्भय होता है।

विपत्तियाँ तथा प्रतिकूल परिस्थितियाँ प्रायः सभी के जीवन में आती हैं, किन्तु सदाचारी व्यक्ति इनसे कभी विचलित नहीं होता। ऐसा व्यक्ति जीवन में कितनी भी बड़ी विपदा आ जाए तो भी उनसे मुकाबला करने की क्षमता रखता है। उसमें असीम धैर्य एवं सहनशक्ति जैसे महान गुण होते हैं। परोपकार करना उसका स्वभाव होता है। वह अपने कार्यों से सदा दूसरों का भला करता है। लोग उस पर विश्वास करते हैं। सभा हो या समुदाय, सदाचार से युक्त व्यक्ति सर्वत्र पूजा जाता है।

सदाचार सफलता का मार्ग है, जो व्यक्ति को मंजिल तक पहुँचाता है। अच्छे व्यवहार के कारण कठिन काम भी सहजता से बन जाते हैं। इसके द्वारा मनुष्य अपनी असीम शक्ति को प्रकट कर सकता है। सदाचार के बल पर असीम शक्ति को प्रकट करने वाला सामर्थ्यवान मनुष्य संत और महापुरुष के रूप में जाना जाता है। वह अपने महान कार्यों से महापुरुष कहलाता है। ऐसे ही महापुरुष हमारे आदर्श होते हैं। उनका सद्‌व्यवहार अनुकरणीय होता है। हमें परस्पर सद्‌व्यवहार करना चाहिए। सद्‌व्यवहार ही वास्तव में सदाचार है।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

सदाचार – अच्छा व्यवहार, नैतिक आचरण
संयम – नियंत्रण
सद्‌गुण – अच्छा गुण

विचरण – घूमना, फिरना

विपत्ति – संकट

उच्चारण के लिए

सद्‌गुण, सत्पुरुष, अखण्ड, संपर्क, विपत्तियाँ, परिस्थितियाँ, सर्वत्र, आदर्श, इज्जत, मनुष्य, शक्ति, सामर्थ्यवान

सोचें और बताएँ

1. सदाचार किसे कहते हैं ?
2. विपत्ति में क्या करना चाहिए ?
3. सद्‌गुण से क्या तात्पर्य है?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

   (अ)मनुष्य एक ..... है। समाज में रहकर वह कई तरह के काम करता है।

   (ब)सदाचारी बनने के लिए ..... होना आवश्यक है।

2. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

   (अ)उत्तम व्यक्ति के गुण हैं–

   (क) गुरुजनों का आदर करना (ख) मधुर बोलना

   (ग) विनम्र रहना (घ) उपर्युक्त सभी ( )

   (ब) सत्य बोलना एक प्रकार की तपस्या है–

   (क) खण्ड (ख) व्यावहारिक

   (ग) अखण्ड (घ) असत्य ( )

3. व्यक्ति के सदाचारी होने की पहचान किससे होती है ?
4. सदाचारी व्यक्ति में कौन–कौन से गुण होते हैं ?
5. प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सदाचारी व्यक्ति विचलित क्यों नहीं होता है ?
6. सदाचार सफलता का मार्ग है, कैसे ?
7. महापुरुष हमारे आदर्श क्यों हैं ?

भाषा की बात

- शब्दांशों और शब्दों को जोड़कर नए शब्द बनाएँ और अर्थ जानें, जैसे–

अनु+शासन–अनुशासन, अनु+प्रेरणा–अनुप्रेरणा, अनु+रूप–अनुरूप आदि

बे+ईमान – .....

महा+पुरुष – .....

पर + उपकार –.....

इस प्रकार अनु, बे, महा, पर आदि शब्दांश जो किसी अन्य शब्द के आगे लगते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं। ऐसे ही अन्य और उपसर्ग भी जानिए।

- विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें

सदाचार – दुराचार

ईमानदार – .....

सम्मान – .....

निर्भय – .....

अनुकूल – .....

सद्‌गुण – .....

यह भी करें–

- सदाचार के महत्त्व पर पाँच वाक्य लिखें।
- किन्हीं दो महापुरुषों के चित्रों को संकलित कर, 'मेरा संकलन' में चिपकाएँ और उनके बारे में अपने विचार लिखें तथा विद्‌यालय में आयोजित बाल–सभा, उत्सवों के अवसर पर सुनाएँ।

महापुरुष का चित्र लगाएँ	महापुरुष का चित्र लगाएँ

असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिंगारी भी उसे भस्म कर देती है।

हरिभाऊ उपाध्याय

केवल पढ़ने के लिए

कामधेनु

मेरे प्रिय पुत्रों/पुत्रियों!

हाँ, मैं प्रत्येक मनुष्य को बल, बुद्धि, आयु, आरोग्य, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य एवं कीर्ति देती हूँ। जो अनुभव करते हैं वो मुझे 'माता' कहते हैं और मैं भी उनको पुत्रवत् प्रेम करती हूँ।

पुत्र/पुत्रियों का कर्त्तव्य है, 'माँ' की सेवा करना 'माँ' की रक्षा करना, और 'माँ' का कर्त्तव्य है पुत्र/पुत्रियों को जीवन देना। मैं अनादि काल से विश्व का कल्याण करती आ रही हूँ, इसलिए मुझे विश्व की जननी कहते हैं। संसार में, मैं अंत तक अपना कर्त्तव्य निभाऊँगी। चाहे वह धर्मयुग हो या विज्ञान युग, पुत्र माँ से प्रेम करें या उसे कष्ट दें, मुझे तो मेरे पुत्रों/पुत्रियों से प्रेम करना ही है।

मैं दूध, दही, घी के रूप में "अमृत" प्रदान करती हूँ। जिससे मेरे पुत्रों/पुत्रियों को सत्वगुण संपन्न बनाती हूँ। मैं अपने 'मूत्र' और 'गोबर' के रूप में दवाइयाँ, खाद और कीट नियंत्रक भी देती हूँ। मैं अपनी संतान 'बैल' को खेती के लिए साधन स्वरूप देती हूँ। मैं अपने श्वास–प्रश्वास से वायुमण्डल को शुद्ध करती हूँ। मेरे चरण स्पर्श से रजकण को शक्तिमान बनाती हूँ। मेरे दूध, दही, घी, मूत्र, गोबर आदि को पंचगव्य कहते हैं। यह एक अद्भुत तथा सर्वशक्तिमान रसायन हैं। मनुष्य के लिए यह 'प्राण' है जो मेरी उपयोगिता समझेगा, वही मेरी सेवा करेगा। जिसके भाग्य में होगा वही अमृतमयी आनंद लूटेगा और उनके लिए मैं "माँ स्वरूपा कामधेनु हूँ।"

तुम्हारी
कामधेनु गौ माता